मानमिन माचार

No. 66 8 February 2026

“मेरा घुटना, जो गठिया से पीड़ित था, प्रार्थना के बाद पूरी तरह ठीक हो गया।”

“बैंग ह्यून-चो | महिला, 63 वर्ष, गंगबुक-गु, सियोल”

पिछले साल सोमवार, 10 नवंबर को अचानक मेरे दाहिने घुटने में दर्द शुरू हो गया। बुधवार की शाम तक दर्द इतना बढ़ गया कि चाहे मैं घुटना टेकूँ या पैर सीधा करूँ, दोनों ही स्थिति में बहुत दर्द होता था, और चलना भी मुश्किल हो गया था। मुझे यह भी लगने लगा कि क्या मैं हर रात होने वाली डेनियल प्रार्थना सभा में लगातार शामिल हो पाऊँगी या नहीं। फिर भी, मैं अपने स्थानीय आराधना स्थल पर प्रार्थना सभा में शामिल हुई और अगले दिन कारण जानने के लिए अस्पताल गई। डॉक्टर ने मुझे गठिया (आर्थराइटिस) होने का निदान किया और कहा कि दर्द आगे चलकर और बढ़ सकता है, यहाँ तक कि चलना भी कठिन हो सकता है, और उन्होंने इलाज की सलाह दी। लेकिन मैंने इलाज न कराने का फैसला किया और घर लौट आई।सोमवार, 17 तारीख को, जब पास्टर ली मियॉन्ग ने डेनियल प्रार्थना सभा का नेतृत्व किया, तो उन्होंने हमारे पैरिश के सदस्यों को मुख्य चर्च में आने के लिए आमंत्रित किया। वास्तव में, मुख्य चर्च मेरे घर से लगभग डेढ़ घंटे की दूरी पर है। वहाँ पहुँचने के लिए बस और मेट्रो बदलनी पड़ती है और कई सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं, इसलिए मैंने थोड़ी देर सोचा कि क्या मेरे पैर यह सहन कर पाएँगे। फिर भी, मन में गहरी लालसा लेकर मैं वहाँ गई। परमेश्वर की कृपा से, प्रार्थना सभा के दौरान मुझे बहुत बड़ा अनुग्रह मिला और आत्मचिंतन करते हुए पश्चाताप करने का अवसर मिला। अनुग्रह से भरी प्रार्थना सभा समाप्त होने के बाद, मैं डेढ़ घंटे की यात्रा करके घर लौटी, और तभी एक अद्भुत बात घटी। बिना किसी इंजेक्शन या दवा के, अगले दिन मंगलवार से मेरे घुटने का दर्द कम होने लगा और मेरी चाल में साफ़ सुधार आने लगा। बुधवार को तो ऐसा लगा जैसे मुझे कभी कोई दर्द था ही नहीं। तब से अब तक मुझे कोई दर्द नहीं है और मैं अपना दैनिक जीवन आराम से जी रही हूँ। हल्लेलूया मैं मुझे पूरी तरह चंगा करने वाले हमारे भले पिता परमेश्वर को सारा धन्यवाद और महिमा देती हूँ।

“जिस सेप्सिस ने मेरे जीवन को खतरे में डाल दिया था, उससे मैं पूरी तरह चंगी हो गई।”

प्रिसिला इन्ज़ाई | महिला, 46 वर्ष, नैरोबी, केन्या

पिछले वर्ष नवंबर की शुरुआत में अचानक मेरे पूरे शरीर में तेज़ दर्द होने लगा। बार-बार तेज़ बुखार आता, जिससे बहुत पसीना आता, फिर ठंड लगती और शरीर काँपने लगता। मतली बनी रहती थी और मेरी ताकत इतनी तेज़ी से गिरने लगी कि कुछ कदम चलना भी मुश्किल हो गया। ऐसा लगता था मानो पूरे शरीर की नसें और मांसपेशियाँ जवाब दे रही हों और अपने शरीर को संभाल पाना कठिन हो गया हो। समय बीतने के साथ मेरे जोड़ कमजोर होते गए और मैं हर दिन लगातार दर्द से जूझती रही। मैं नैरोबी मनमिन चर्च में पास्टर के रूप में सेवा करती हूँ, जहाँ मैं पैरिश के कई क्षेत्रों की ज़िम्मेदारी संभालती हूँ और संडे स्कूल में बच्चों को सिखाने और मार्गदर्शन देने का काम भी करती हूँ। सामान्यत: मैं ये सभी सेवाएँ खुशी-खुशी करती थी, लेकिन हल्की-सी हरकत के बाद होने वाला दर्द इतना बढ़ गया कि मेरे लिए अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाना और चर्च की गतिविधियों में शामिल होना भी कठिन हो गया। लगभग दो सप्ताह बाद मेरी हालत और बिगड़ गई। मैं मुश्किल से कुछ खा पाती थी और जो भी खाती, थोड़ी देर में उल्टी हो जाती। मेरा शरीर साफ़ तौर पर कमजोर होता चला गया। कभी तेज़ बुखार से जलने लगती, पसीना आता, फिर अचानक बहुत ठंड लगती और शरीर काँपने लगता। अंतत: मैं कई दिनों तक बिस्तर पर पड़ी रही और उठ भी नहीं पाती थी।

जब मेरी हालत लगातार बिगड़ती गई, तो नवंबर के चौथे सप्ताह में मैं पूरी जाँच के लिए अस्पताल गई। डॉक्टर ने बताया कि यह रक्त में बैक्टीरिया के प्रवेश के कारण हुआ संक्रमण है और यह बहुत गंभीर स्थिति है, जो सेप्सिस में बदल सकती है या शायद पहले ही सेप्सिस बन चुकी है। सेप्सिस एक जानलेवा बीमारी है, जिसमें बैक्टीरिया या सूक्ष्मजीव रक्त के माध्यम से पूरे शरीर में फैल जाते हैं और गंभीर सूजन पैदा करते हैं। इस अत्यंत कठिन स्थिति में मैंने पूरी तरह से चंगाई के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने का निश्चय किया। उस सप्ताह मैंने 28 नवंबर को होने वाली दिव्य चंगाई सभा में शामिल होने और प्रार्थना ग्रहण करने का फैसला किया। नैरोबी मनमिन चर्च में हमारी GCN टीम मुख्य चर्च की दिव्य चंगाई सभा को रिकॉर्ड करती है और उसे ऑल-नाइट सेवा के दौरान साझा करती है। मैंने भी उस रात की सेवा में भाग लिया। जब मैंने सीनियर पास्टर सूजिन ली द्वारा प्रचारित संदेश, “जैसा तुम स्वीकार करते हो, वैसा ही होगा” (रोमियों 10:10) सुना, तो मैंने उन नकारात्मक शब्दों के लिए गहराई से पश्चाताप किया जो मैंने लापरवाही से कहे थे, और उन शिकायतों के लिए भी जो मैंने तब की थीं जब चीज़ें मेरे अनुसार नहीं होती थीं। मैंने उन समयों पर भी मनन किया जब मैं पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा नहीं कर पाई थी। संदेश के बाद, जब सीनियर पास्टर ने बीमारों के लिए प्रार्थना पूरी की, तो एक अद्भुत परिवर्तन हुआ। अचानक मेरे पूरे शरीर से पसीना बहने लगा और मुझे तीव्र गर्मी महसूस हुई, मानो पवित्र आत्मा की आग मुझ पर उतर आई हो। जब पसीना रुक गया, तो गर्मी भी शांत हो गई और ऐसा लगा जैसे एक ठंडी, ताज़गी भरी हवा मेरे पूरे शरीर को धीरे-धीरे ढँक रही हो। उसी क्षण, सारा दर्द और पीड़ा, जो मुझ पर बोझ बनी हुई थी, ऐसे गायब हो गई जैसे वे कभी थीं ही नहीं। मेरा शरीर पूरी तरह बदल गया और जो शरीर पहले बेहद कमजोर था, उसमें नई ताकत भर गई। मैं अब लड़खड़ाती नहीं थी और न ही अस्थिर महसूस कर रही थी, बल्कि स्थिर कदमों से सामान्य रूप से चल पा रही थी। यह सचमुच जीवित परमेश्वर का अद्भुत कार्य था। हल्लेलूयाह! आज भी, दो महीने बाद, मैं अच्छे स्वास्थ्य में जीवन जी रही हूँ और चर्च में अपनी सेवाओं को निष्ठापूर्वक निभा रही हूँ। उस भयानक रक्त संक्रमण और सेप्सिस के खतरे के बीच, जो मेरा जीवन ले सकता था, मुझे पूरी तरह चंगा करने वाले हमारे भले परमेश्वर को मैं सारा धन्यवाद और महिमा देती हूँ।

“मेरी दोनों आँखों की धुंधली दृष्टि सुधरकर 20/13 हो गई।”

“मा मून-गुक | पुरुष, 59 वर्ष, डोंगजाक-गु, सियोल”

मेरी आँखों की रोशनी 2019 से धीरे-धीरे कम होने लगी। दिसंबर 2021 में कराई गई एक स्वास्थ्य जाँच के दौरान मेरी दृष्टि बाईं आँख में 20/25 और दाईं आँख में 20/20 पाई गई। साथ ही मुझे गंभीर प्रेसबायोपिया (उम्र से जुड़ी दूर-नज़दीक देखने की समस्या) भी हो गई, जिससे बाइबल या अन्य सामग्री पढ़ना भी मुश्किल हो गया। अंततः मैंने पढ़ने का चश्मा इस्तेमाल करना शुरू किया, फिर भी बाइबल पढ़ना आसान नहीं था।

उसी समय के आसपास मैंने मुआन स्वीट वॉटर स्प्रे का उपयोग शुरू किया, जिसमें वह पानी था जो कड़वे से मीठा हो गया था (निर्गमन 15:25)। मैं इसे हर सुबह उठते ही नियमित रूप से अपनी आँखों पर लगाता था। इस मीठे पानी का उपयोग करने के बाद, 2022 और 2023 के दौरान मैं अपनी दृष्टि में स्पष्ट सुधार महसूस करने लगा। दिसंबर 2023 की स्वास्थ्य जाँच में मेरी दृष्टि बाईं आँख में 20/13 और दाईं आँख में 20/20 पाई गई, जो एक स्पष्ट सुधार था। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह रही कि दिसंबर 2025 की जाँच में मेरी दोनों आँखों की दृष्टि 20/13 पाई गई, जो दोनों आँखों में पूरी तरह अच्छी दृष्टि की बहाली को दर्शाता है। हल्लेलूयाह! अब मुझे प्रेसबायोपिया का कोई लक्षण नहीं है और मैं बाइबल तथा अन्य विभिन्न सामग्री आराम से पढ़ सकता हूँ। मेरी आँखों को चंगा करने वाले हमारे भले पिता परमेश्वर को मैं सारा धन्यवाद और महिमा देता हूँ।

“मैं रीढ़ की हड्डी के फ्रैक्चर से चंगा हो गया और पहले से भी अधिक मज़बूत हो गया।”

“किम यून-जंग | महिला, 54 वर्ष, गुरो-गु, सियोल”

पिछले वर्ष नवंबर की शुरुआत में मैं बाथरूम में फिसल गई और मेरी बाईं पीठ तथा कमर के निचले हिस्से में चोट लग गई। दर्द इतना ज़्यादा था कि बैठना या खड़ा होना भी मुश्किल हो गया था। जब भी मैं शरीर घुमाती या उठने की कोशिश करती, तो पूरे शरीर में चुभने जैसा तेज़ दर्द फैल जाता, जिससे रोज़मर्रा का जीवन बहुत कठिन हो गया। दर्द कम करने के लिए मुझे बैक ब्रेस पहनना पड़ता था। अस्पताल में एक्स-रे कराने के बाद मुझे बताया गया कि रीढ़ की हड्डी में फ्रैक्चर होने की आशंका है। लेकिन अस्पताल में इलाज कराने के बजाय मैंने दिव्य चंगाई सभा के लिए मरीज के रूप में पंजीकरण कराया। दिव्य चंगाई सभा की विशेष प्रार्थना में भाग लेते समय, मेरे मन में आए नकारात्मक शब्दों और शारीरिक विचारों के लिए मैंने गहराई से पश्चाताप किया, जिन्हें मैंने पहले कहा और सोचा था। नींद के दौरान भी कई बार तेज़ दर्द उठता था, लेकिन हर बार मुझे यह विश्वास होता कि पिता परमेश्वर मुझे चंगा कर रहे हैं, और तुरंत ही मेरे मन में शांति आ जाती थी। मैं इस बात के लिए धन्यवाद देने लगी कि अब तक उन्होंने मेरी रक्षा की और मुझे सामर्थ्य दी। दिन-प्रतिदिन मैं दिव्य चंगाई के लिए तैयारी करती रही और पास्टर सूजिन ली की प्रार्थना प्राप्त करती रही। जो दर्द चाकू से कटने जैसा लगता था, वह धीरे-धीरे कम होने लगा, उसकी जगह सुई-सी चुभन का एहसास हुआ और अंत में वह पूरी तरह से समाप्त हो गया। 25 नवंबर को मैंने पावर प्रेज़ क्रिसमस स्पेशल की रिकॉर्डिंग में भी भाग लिया और ऐसे स्वतंत्र होकर नाचती और स्तुति करती रही, मानो मुझे कभी कोई दर्द ही न हुआ हो। हल्लेलूयाह! आज तक मुझे बिल्कुल भी दर्द नहीं है और मैं बिना किसी रुकावट के अपना दैनिक जीवन जी रही हूँ। इतना ही नहीं, मेरी देह-स्थिति (पोश्चर) — विशेष रूप से मेरी कमर और रीढ़ की हड्डी, जो लंबे समय से झुकी हुई रहती थी — वह भी साफ़ तौर पर सीधी हो गई है। यहाँ तक कि मेरा उच्च रक्तचाप भी सामान्य हो गया है। अब मैं पहले से भी अधिक स्वस्थ हूँ। मुझे पूरी तरह चंगा करने वाले परमेश्वर को मैं सारा धन्यवाद और महिमा देती हूँ।

पास्टर सूजिन ली का ‘ओनली द बाइबल’ एक बहुभाषी यूट्यूब कार्यक्रम है।

यह कार्यक्रम 6 भाषाओं में डब किया गया है (अंग्रेज़ी, चीनी, जापानी, स्पेनिश, रूसी और फ्रेंच) और 13 भाषाओं में सबटाइटल उपलब्ध हैं (अंग्रेज़ी, चीनी, जापानी, स्पेनिश, रूसी, फ्रेंच, उर्दू, हिंदी, स्वाहिली, तमिल, रोमानियाई और हिब्रू)।

यूहन्ना 19:30 के अनुसार, यीशु ने खट्टा दाखमधु चखा और कहा, “ पूरा हुआ,” और फिर अपना सिर झुकाकर आत्मा त्याग दी। यीशु ने खट्टे दाखमधु में भिगोया हुआ स्पंज केवल अपनी शारीरिक प्यास बुझाने के लिए स्वीकार नहीं किया था। इसके पीछे एक गहरा आत्मिक अर्थ भी छिपा हुआ है। यीशु द्वारा खट्टा दाखमधु स्वीकार करने का अर्थ यह है कि उन्होंने प्रेम के द्वारा पुराने नियम की व्यवस्था को पूरा कर दिया और समस्त मानव जाति के शाप और पाप अपने ऊपर ले लिए। पुराने नियम के युग में, यीशु के इस पृथ्वी पर आने से पहले, जब भी लोग पाप करते थे, उन्हें पशुओं की बलि चढ़ानी पड़ती थी और उनका लहू परमेश्वर को अर्पित करना पड़ता था।लेकिन क्योंकि स्वयं यीशु क्रूस पर चढ़ाए गए और उन्होंने अपना लहू बहाया, एक बार में ही सदा के लिए पूर्ण बलिदान अर्पित किया (इब्रानियों 10:11–12), इसलिए अब जो कोई भी विश्वास के द्वारा यीशु मसीह को ग्रहण करता है, उसके पाप क्षमा किए जा सकते हैं। यीशु मसीह के द्वारा मिला उद्धार का अनुग्रह ही “नया दाखमधु” है, और यीशु ने स्वयं “खट्टा दाखमधु” पीकर हमें वह अनुग्रह प्रदान किया। “सब पूरा हुआ” का आत्मिक अर्थतो फिर, जब खट्टे दाखमधु में

> जब यीशु ने वह सिरका लिया,
> तो कहा पूरा हुआ और
> सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए॥
> यूहन्ना 19:30

भिगोया हुआ स्पंज यीशु के होठों को छू गया, तब उन्होंने क्यों कहा, “सब पूरा हुआ”? यीशु के इस पृथ्वी पर आने का उद्देश्य यह था कि वे क्रूस पर मृत्यु के द्वारा समस्त मानव जाति के लिए उद्धार का मार्ग खोलें। वे यह कह सके कि पूरा हुआ,” क्योंकि उन्होंने मानव उद्धार के लिए परमेश्वर की इस दिव्य योजना को पूर्ण रूप से पूरा कर दिया था। यीशु वही वचन हैं जो देहधारी हुआ। इस पृथ्वी पर आकर उन्होंने न केवल स्वर्ग के सुसमाचार का प्रचार किया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया, बल्कि परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हुए क्रूस उठाया और मृत्यु की ओर जा रहे समस्त मानव जाति के लिए उद्धार का मार्ग खोल दिया। मृत्यु तक स्वयं को बलिदान करके उन्होंने प्रेम के द्वारा व्यवस्था को पूरा किया और शत्रु शैतान के गढ़ को तोड़कर पूर्ण विजय प्राप्त की। प्रेम के बिना वे क्रूस के उस असहनीय दुःख को कैसे सह पाते? क्योंकि यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा व्यवस्था को पूरी तरह पूरा कर दिया, इसलिए उन्होंने घोषणा की, “सब पूरा हुआ।” क्योंकि बाइबल परमेश्वर की संतान के लिए दी गई संदेश है, हमें यह पहचानना चाहिए कि यीशु के शब्द, “सब पूरा हुआ,” हमारे लिए भी एक संदेश हैं। तो फिर, आत्मिक रूप से इसका क्या अर्थ है? जैसे यीशु ने परमेश्वर की इच्छा और योजना का मृत्यु तक आज्ञा मानकर उद्धार की व्यवस्था को पूरी तरह पूरा किया, वैसे ही हमें भी, जो परमेश्वर की संतान हैं, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन जीते हुए सब कुछ पूरा करने वाले लोग बनना चाहिए। हमें पाप के विरुद्ध लहू बहाने तक संघर्ष करना चाहिए और उसे त्याग देना चाहिए, ताकि हम आत्मिक प्रेम (1 कुरिन्थियों 13:4–7), पवित्र आत्मा के नौ फल (गलातियों 5:22–23), और धन्यवचन (मत्ती 5:3–10) को विकसित कर सकें, और प्रभु के हृदय के समान बनते जाएँ। साथ ही, हमें प्रार्थना में लगे रहकर, सुसमाचार प्रचार करके और विश्वासयोग्य सेवा के द्वारा अपनी बुलाहट को निष्ठापूर्वक पूरा करना चाहिए, ताकि हम अनेक आत्माओं को प्रभु की गोद में ला सकें।